UP Board Notes Class 8 Hindi Chapter 18 महर्षि दयानन्द (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

महर्षि दयानन्द का बचपन का नाम मूलशंकर था। इसका जन्म सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में सन् 1824 ई० को गुजरात के टकरा गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम कर्षन जी त्रिवेदी और माता का नाम शोभाबाई था। मूलशंकर का मन अध्ययन और एकान्त चिन्तन में अधिक लगता था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा संस्कृत में हुई। ये कुशाग्र बुद्धि और विलक्षण स्मृति वाले छात्र थे।

सोलह वर्ष की आयु में मूलशंकर के जीवन में छोटी बहन की हैजे से मृत्यु होने से इनमें वैराग्य भावना पैदा हो गई। इसके तीन वर्ष बाद मूलशंकर को स्नेह करने वाले चाचा को भी देहान्त हो गया। 21 वर्ष की आयु में ये चुपचाप घर से निकल पड़े। सायले गाँव (अहमदाबाद) में जाकर एक ब्रह्मचारी जी से दीक्षा लेकर शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी बन गए। इसके बाद नर्मदा के तट पर दण्डी स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास की दीक्षा लेकर ये दयानन्द सरस्वती हो गए। दीक्षा के उपरान्त इन्होंने सारा समय विद्याध्ययन और योगाभ्यास में लगाया। इन्होंने द्वारिका के स्वामी महात्मा शिवानन्द से योग विद्या का ज्ञान प्राप्त किया। इसके बाद मथुरा के स्वामी विरजानन्द के चरणों में दयानन्द ने 'अष्टाध्यायी म्हाभाष्य और 'वेदान्त सूत्र' आदि अनेक ग्रन्थों का अध्ययन किया। विद्याध्ययन की समाप्ति पर गुरु के आदेशों का पालन करने की प्रतिज्ञा की। गुरु का आदेश था- "वत्स दयानन्द! जंगलों में एकान्त साधना में संन्यास की पूर्णता नहीं है। कुसंस्कारों और अन्धविश्वासों का खण्डन करके समाज का उद्धार करो।"

स्वामी दयानन्द ने जीवनभर आडम्बरों का विरोध किया। उन्होंने महान ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखा जिसमें धर्म, समाज, राजनीति, नैतिकता एवं शिक्षा पर उनके संक्षिप्त विचार दिए गए हैं। सन् 1875 ई० में स्वामी जी ने 'आर्य-समाज' की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य सभी मनुष्यों के शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक स्तर को उठाना था।

उन्होंने वेदों और संस्कृत साहित्य के अध्ययन पर बल दिया। उन्होंने नारी शिक्षा पर भी बल दिया। उन्होंने पर्दा प्रथा और बाल-विवाह का विरोध किया। विधवा विवाह और पुनर्विवाह का समर्थन किया। समाज में व्याप्त वर्ण-भेद, असमानता और छुआछूत की भावना का भी उन्होंने खुलकर विरोध किया। उन्होंने संस्कृत भाषा और धर्म को ऊँचा स्थान दिलाने के लिए हिन्दी भाषा को प्रतिष्ठित किया। महर्षि दयानन्द समाज सुधारक और आर्य संस्कृति के रक्षक थे। मानव कल्याण की कामना करने वाले महर्षि दयानन्द का जीवन-दीप सन् 1883 ई० को कार्तिक की अमावस्या को सहसा बुझ गया। स्वामी दयानन्द 19वीं सदी के भारत के पुनर्जागरण के प्रेरक व्यक्ति थे।

https://www.evidyarthi.in/